RADHEY HARI GOVT. P. G. COLLEGE
KASHIPUR (UDHAM SINGH NAGAR)-244713
Website: www.rhgpgckashipur.ac.in Email:rhgpgc@gmail.com
AISHE CODE- C-21911
Estd-1973

FACULTY OF ARTS
Department of Hindi
Programme & Course Outcomes

हिन्दी विभाग

राधे हरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय काशीपुर, ऊधम सिहं नगर

(सम्बद्ध–कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल)

उद्देश्य– हिंदी विभाग का उद्देश्य अकादमिक उत्कृष्टता, सांस्कृतिक संरक्षण और व्यावसायिक विकास को बढ़ावा देना होना चाहिए। इसका उद्देश्य हिंदी साहित्य, भाषा और भाषा विज्ञान में व्यापक शिक्षा प्रदान करना है, अत्याधुनिक शोध के माध्यम से आलोचनात्मक सोच और नवाचार को बढ़ावा देना है। विभाग छात्रों की भारतीय संस्कृति और विरासत की समझ को बढ़ाने के साथ-साथ उन्हें शिक्षा, मीडिया, प्रकाशन और उससे आगे के क्षेत्रों में करियर के लिए व्यावहारिक कौशल से लैस करना चाहता है। डिजिटल उपकरणों को एकीकृत करके और उद्योग सहयोग को बढ़ावा देकर, विभाग छात्रों को आधुनिक कार्यबल के लिए तैयार करेगा। समावेशिता और समग्र विकास के लिए प्रतिबद्ध, विभाग अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक साझेदारी स्थापित करने और हिंदी की वैश्विक प्रासंगिकता को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक पहुंच में भी शामिल होगा।

शैक्षिक कार्यक्रम उद्देश्य– बी.ए. और एम.ए. हिंदी कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों को हिंदी साहित्य का ज्ञान और भाषा दक्षता प्रदान करना है। दोनों कार्यक्रमों के मुख्य उद्देश्य हैं:

बी.ए.

- स्नातकों को हिंदी साहित्य, भाषा और भाषा विज्ञान की मूलभूत अवधारणाओं की ठोस समझ होगी, जिसमें प्रमुख शास्त्रीय और आधुनिक ग्रंथ शामिल हैं।
- हिंदी की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और उससे जुड़े भारतीय परंपराओं और मूल्यों को बढ़ावा देने वाली सांस्कृतिक गतिविधियों और कार्यक्रमों में भाग लेंगे।

- विद्यार्थी आलोचनात्मक सोच और विश्लेषणात्मक कौशल विकसित करेंगे, जिससे वे साहित्यिक कार्यों और भाषाई संरचनाओं की व्याख्या और मूल्यांकन करने में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी शिक्षा, मीडिया, प्रकाशन, अनुवाद और अन्य क्षेत्रों में प्रवेश स्तर के करियर के लिए तैयार होंगे, जिनके लिए हिंदी दक्षता की आवश्यकता होती है, साथ ही आगे की शैक्षणिक गतिविधियों के लिए भी।
- विद्यार्थी नैतिक विचारों और सामाजिक जिम्मेदारियों की समझ का प्रदर्शन करेंगेए समाज की बेहतरी के लिए अपने ज्ञान को लागू करेंगे।

एम.ए.

- स्नातकोत्तर छात्र रुचि के विशिष्ट क्षेत्रों और उन्नत सैद्धांतिक रूपरेखाओं पर ध्यान देने के साथ हिंदी साहित्य, भाषा और भाषा विज्ञान का गहन ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- स्नातकोत्तर उच्च-गुणवत्ता वाले शोध में संलग्न होंगे, हिंदी अध्ययन के क्षेत्र में मूल अंतर्दृष्टि का योगदान देंगे और प्रकाशनों और प्रस्तुतियों के माध्यम से अपने निष्कर्षों का प्रसार करेंगे।
- स्नातकोत्तर छात्र अपने शैक्षणिक और व्यावसायिक प्रयासों में नेतृत्व कौशल और नवीन दृष्टिकोण विकसित करेंगे, जिससे हिंदी अध्ययन और संबंधित क्षेत्रों की दिशा प्रभावित होगी।
- स्नातकोत्तर छात्र हिंदी के वैश्विक महत्व और इसके अंतःविषय संबंधों को समझेंगे, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और अंतर-सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देंगे।
- स्नातकोत्तर छात्र हिंदी में उन्नत लिखित और मौखिक संचार में उत्कृष्टता प्राप्त करेंगे, साथ ही दूसरों को प्रभावी ढंग से सिखाने और मार्गदर्शन करने की क्षमता भी रखेंगे।
- स्नातकोत्तर छात्र नैतिक विद्वता के उच्चतम मानकों को बनाए रखेंगे, समाज में सार्थक योगदान देने और समकालीन चुनौतियों का सामना करने के लिए अपने उन्नत ज्ञान और कौशल का उपयोग करेंगे।

RADHEY HARI GOVT. P. G. COLLEGE
KASHIPUR (UDHAM SINGH NAGAR)-244713
Website: www.rhgpgckashipur.ac.in Email:rhgpgc@gmail.com
AISHE CODE- C-21911
Estd-1973

हिन्दी विभाग
राधे हरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय काशीपुर, ऊधम सिहं नगर
कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल

हिन्दी भाषा
प्रथम प्रश्न पत्र
बी.ए. प्रथम सत्र

कोर्स आउटकम

1. शिक्षार्थी हिंदी भाषा के व्यावहारिक प्रयोजनार्थ वर्तनी एवं शब्दों के मानक स्वरूप का ज्ञान व प्रशिक्षण पाता है।
2. शिक्षार्थी व्यावहारिक प्रयोजनार्थ शुद्ध लेखन हेतू हिंदी की वाक्य–सरंचना एवं व्याकरण का ज्ञान व प्रशिक्षण पाता है।
3. शिक्षार्थी को व्यावहारिक–व्यावसायिक प्रयोजनार्थ हिंदी भाषा की अत्यंत समृद्ध शब्द संपदा तथा उसकी समाहार–समायोजन शक्ति का ज्ञान होता है।
4. शिक्षार्थी कार्यालयी प्रयोजनार्थ पारिभाषिक – प्रतिपारिभाषिक शब्दों के प्रयोग का ज्ञान व प्रशिक्षण पाता है।

हिन्दी भाषा
द्वितीय प्रश्न पत्र
बी.ए. द्वितीय सत्र

कोर्स आउटकम

1. शिक्षार्थी को हिंदी भाषा के विस्तृत व समृद्ध इतिहास व विकास का ज्ञान होता है
2. शिक्षार्थी को हिंदी की शैलियों यथा हिंदी, हिंन्दुस्तानी व उर्दू का ज्ञान होता है, जो भाषा के व्यावहारिक प्रयोग में काम आता है।
3. शिक्षार्थी को हिंदी की बोलियों का ज्ञान होता है, जिसके आधार पर वह अपने भाषा संस्कारों को समृद्ध करता है तथा संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग अधिक कुशलता के साथ कर पाता है।
4. शिक्षार्थी को राजभाषा के रूप में हिंदी की संवैधानिक स्थिति का ज्ञान होता है, जिसकी आवश्यकता उसे सरकारी सेवाओं में आवश्यकीय रूप से होती है।
5. शिक्षार्थी विभिन्न व्यावहारिक व व्यावसायिक प्रयोजनों हेतू हिंदी के मानकीकृत रूप का ज्ञान व प्रशिक्षण पाता है।
6. शिक्षार्थी कम्प्यूटर व इंटरनेट की तकनीक में हिंदी के प्रयोग का आंरभिक ज्ञान व प्रशिक्षण पाता है।

पाठ्यक्रम परिणाम :—

1. साहित्य मानव संवेदना की अभिव्यक्ति का प्रमुख स्त्रोत रहा है। कलाओं में यह संपूर्ण कला है। साहित्य समाज का प्रतिदर्श है। स्नातक उपाधि में इस विषय के चयन व अध्ययन से शिक्षार्थी को साहित्य के सांगोपांग महत्व का ज्ञान होता है।
2. शिक्षार्थी को राष्ट्र की सर्वप्रमुख भाषा हिंदी के अंत्यंत समृद्ध साहित्य के संपूर्ण स्वरूप का ज्ञान होता है।
3. शिक्षार्थी को हिंदी साहित्य की सभी प्रमुख विधाओं का ज्ञान होता है, जिससे उससे रचनात्मक का प्रस्फुटन एवं विकास होता है।
4. शिक्षार्थी को जीवन के आजीविकोपार्जन संबंधी पक्ष के रूप में हिंदी के प्रयोजनमूलक स्वरूप व महत्व का ज्ञान एवं प्रशिक्षण होता है।
5. साहित्य के अध्ययन में अन्य अनुशासनों के संदर्भ यथा सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, पर्यावरणीय आदि समाहित होते हैं।

हिन्दी साहित्य

प्रोग्राम आउटकम

1. साहित्य मानव संवेदना की अभिव्यक्ति का प्रमुख स्त्रोत रहा है। कलाओं में यह संपूर्ण कला है। साहित्य समाज का प्रतिदर्श है। स्नातक उपाधि में इस विषय के चयन व अध्ययन से शिक्षार्थी को साहित्य के सांगोपांग महत्व का ज्ञान होता है।
2. शिक्षार्थी को राष्ट्र की सर्वप्रमुख भाषा हिंदी के अत्यंत समृद्ध साहित्य के संपूर्ण स्वरूप का ज्ञान होता है।
3. शिक्षार्थी को हिंदी साहित्य की सभी विधााओं का ज्ञान होता है, जिससे उनमें रचनात्मकता का प्रस्फुटन एवं विकास होता है।
4. शिक्षार्थी को जीवन के आजीविकोपार्जन संबंधी पक्ष के रूप में हिंदी के प्रयोजनमूलक स्वरूप व महत्व का ज्ञान एवं प्रशिक्षण होता है।
5. साहित्य के अध्ययन में अन्य अनुशासनों के संदर्भ यथा सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, पर्यावरणीय आदि समाहित होते है।स्नातक में हिंदी साहित्य का चयन शिक्षार्थी को समग्र रूप से शिक्षित करता है।

RADHEY HARI GOVT. P. G. COLLEGE
KASHIPUR (UDHAM SINGH NAGAR)-244713
Website: www.rhgpgckashipur.ac.in Email:rhgpgc@gmail.com
AISHE CODE- C-21911
Estd-1973

प्रथम सेमेस्टर

प्राचीन एवं भक्तिकालीन काव्य (प्रथम प्रश्नपत्र)

1. शिक्षार्थी हिंदी साहित्य के आरंभिक काल की कविता का ऐतिहासिक एवं सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है
2. शिक्षार्थी चंदबरदाई, जायसी व तुलसी के कृतित्व को समझने के क्रम में महाकाव्य विधा का शिल्पगत परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।
3. शिक्षार्थी आदिकालीन वीरकाव्य का सैद्धातिक परिचय व ज्ञान सोदाहरण प्राप्त करता है
4. शिक्षार्थी निर्गुण काव्यधारा व संत साहित्य का सैद्धातिक परिचय व ज्ञान सोदाहरण प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी सूफी काव्यधारा, सगुण काव्यधारा तथा उसके अंतर्गत रामभक्ति तथा कृष्णभक्ति शाखा के महत्वपूर्ण काव्य का सैद्धातिक परिचय व ज्ञान सोदाहरण प्राप्त करता है।

द्वितीय सेमेस्टर

द्वितीय प्रश्नपत्र – हिंदी कथा साहित्य

1. शिक्षार्थी हिंदी की कथा परंपरा का परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।
2. शिक्षार्थी हिंदी उपन्यास के उद्‌भव और विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. शिक्षार्थी हिंदी कहानी के उद्‌भव और विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. शिक्षार्थी पाठ्‌यक्रम में सम्मिलित उपन्यास के अध्ययन से उपन्यास विधा का शिल्पगत ज्ञान प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी पाठ्‌यक्रम में सम्मिलित कहानियों के आधार पर कहानी विधा का शिल्पगत ज्ञान प्राप्त करता है।
6. शिक्षार्थी कथा साहित्य की समीक्षा का ज्ञान प्राप्त करता है।

सेमेस्टर –3

रीतिकालीन काव्य एवं काव्यांग परिचय

1. शिक्षार्थी हिंदी साहित्य के तीसरे काल रीतिकाल के विषय में ऐतिहासिक एवं सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
2. शिक्षार्थी पाठ्‌यक्रम में सम्मिलित कविताओं के आधार पर रीतिकालीन कविता की कला और शिल्प का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. शिक्षार्थी काव्यांग के अंतर्गत रस के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. शिक्षार्थी काव्यांग के अंतर्गत छंद के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी काव्यांग के अंतर्गत अंलकार के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
6. शिक्षार्थी काव्यांग के अंतर्गत शब्दशक्ति के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।

सेमेस्टर– 4

नाटक एवं एकांकी

1. शिक्षार्थी हिंदी में नाटक विधा के उद्‌भव और विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. शिक्षार्थी नाटक की भारतीय एवं पाश्चात्य परंपराओं का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. शिक्षार्थी नाटक के स्वरूप एवं प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. शिक्षार्थी पाठ्‌यक्रम में सम्मिलित नाटक के अध्ययन के आधार पर नाट्‌यसमीक्षा का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी एंकाकी के उद्‌भव–विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।
6. शिक्षार्थी एंकाकी के स्वरूप, महत्व और प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।

सेमेस्टर– 5

द्विवेदीयुगीन एवं छायावादी काव्य

1. शिक्षार्थी हिंदी के द्विवेदी युग व नवजागरण काल के विषय में ऐतिहासिक व सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है
2. शिक्षार्थी हिंदी कविता के छायावाद युग का ऐतिहासिक व सैद्धातिक ज्ञान प्राप्त करता है।
3. शिक्षार्थी खड़ी बोली हिंदी की आंरभिक समर्थ काव्य–परंपरा का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. शिक्षार्थी पाठ्‌यक्रम में सम्मिलित द्विवेदीयुगीन कविताओं के अध्ययन से तत्कालीन हिंदी कविता के स्वरूप, महत्व तथा शिल्प का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी पाठ्‌यक्रम में सम्मिलित छायावादयुगीन कविताओं के अध्ययन से तत्कालीन हिंदी कविता के स्वरूप, महत्व और शिल्प का ज्ञान प्राप्त करता है।
6. शिक्षार्थी आधुनिक कविता की समीक्षा का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

सेमेस्टर–6

हिंदी के प्रतिनिधि निंबंध

1. शिक्षार्थी निबंध विधा के स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करता है।
2. शिक्षार्थी हिंदी में निबंध विधा के उद्‌भव और विकास का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. शिक्षार्थी सामाजिक व साहित्यिक विषयों से निबंध के वैचारिक संबंध तथा अभिव्यक्ति का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. शिक्षार्थी निंबंध के प्रकारों का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी पाठ्‌यक्रम में सम्मिलित निंबधकारों के अध्ययन से विचार के क्षेत्र में मौलिक अभिव्यक्ति का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

सेमेस्टर–7

छायावादोत्तर हिंदी कविता

1. शिक्षार्थी छायावादोत्तरी कविता का ऐतिहासिक एवं सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
2. शिक्षार्थी आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना से सम्पृक्त काव्य का परिचय प्राप्त करता है।
3. शिक्षार्थी आधुनिक हिंदी कविता में गीतकाव्य का परिचय प्राप्त करता है।
4. शिक्षार्थी आधुनिक हिंदी कविता में प्रगतिवाद का रचनात्मक और आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी आधुनिक हिंदी कविता में प्रयोगवाद का रचनात्मक और आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।
6. शिक्षार्थी आधुनिक हिंदी कविता में नयी कविता का रचनात्मक और आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।
7. शक्षार्थी आधुनिक हिंदी कविता में साठोत्तरी कविता का रचनात्मक और आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।
8. शिक्षार्थी छायावादोत्तरी कविता के विविधरूपी शिल्प का ज्ञान प्राप्त करता है।

सेमेस्टर– 8

स्मारक साहित्य

1. शिक्षार्थी को हिंदी में स्मारक साहित्य लेखन परंपरा का ज्ञान होता है।
2. शिक्षार्थी को स्मारक साहित्य के स्वरूप व उसकी विधाओं का ज्ञान प्राप्त होता है।
3. शिक्षार्थी को पाठ्यक्रम में सम्मिलित रेखाचित्रों के अध्ययन से रेखाचित्र विधा के स्वरूप, तत्वों और विशेषताओं का ज्ञान होता है।
4. शिक्षार्थी को पाठ्यक्रम में सम्मिलित संस्मरणों के अध्ययन से संस्मरण विधा के स्वरूप, तत्वों और विशेषताओं का ज्ञान होता है।

सेमेस्टर–9

प्रयोजनमूलक हिंदी

1. शिक्षार्थी हिंदी भाषा को प्रयोजनमूलक ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
2. शिक्षार्थी सामान्य कार्यालयी प्रयोजनों यथा कार्यालयी पत्राचार, प्रारूपण, टिप्पण आदि में हिंदी के प्रयोग का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
3. शिक्षार्थी हिंदी भाषा की कम्प्युटिंग यथा टाइपिंग, फांट प्रबंधन, आदि का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. शिक्षार्थी मीडिया के क्षेत्र मे लेखन संपादन संबंधी ज्ञान प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी जनसंचार माध्यमों का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करता है।

सेमेस्टर–10

लोक साहित्य

1. शिक्षार्थी साहित्य के लोकपक्ष का ऐतिहासिक तथा सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
2. शिक्षार्थी लोकसाहित्य के स्वरूप, अध्ययन की प्रविधियों, संकलन प्रक्रिया आदि का प्राशिक्षण एवं ज्ञान प्राप्त करता है।
3. शिक्षार्थी लोक संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. शिक्षार्थी लोक साहित्य के अंतर्गत लोकगीतों के स्वरूप, उनके सामाजिक–सांस्कृतिक स्त्रोतों तथा विविध रूपों का ज्ञान प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी लोक साहित्य के अंतर्गत लोकनाटय के स्वरूप, उसके सामाजिक–सांस्कृतिक तथा विविध रूपों का ज्ञान प्राप्त करता है।
6. शिक्षार्थी लोक साहित्य के अंतर्गत लोककथाओं के स्वरूप, उसके सामाजिक–सांस्कृतिक तथा विविध रूपों का ज्ञान प्राप्त करता है।
7. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित लोक साहित्य के अध्ययन द्वारा लोक का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करता है।

सेमेस्टर–11

हिंदी पत्रकारिता

1. शिक्षार्थी को पत्रकारिता के स्वरूप ओंर प्रमुख प्रकारों का ज्ञान होता है।
2. शिक्षार्थी को हिंदी पत्रकारिता के उद्‌भव और विकास का ज्ञान होता है।
3. शिक्षार्थी को पत्रकारिता के मूल तत्वों का ज्ञान होता है।
4. शिक्षार्थी को संपादन कला के विभिन्न आयामों का ज्ञान होता है।
5. शिक्षार्थी को पत्रकारिता से जुड़ी लेखन विधियों का ज्ञान होता है।
6. शिक्षार्थी को प्रेस कानून और आचार संहिता का ज्ञान होता है।

सेमेस्टर– 12

उत्तराखंड का हिंदी साहित्य

1. शिक्षार्थी को आधुनिक हिंदी साहित्य में उत्तराखंड के महत्वपूर्ण लेखकों की उपस्थिति व महत्व का ज्ञान प्राप्त होता है।
2. शिक्षार्थी को आधुनिक काल में उत्तराखंड के हिंदी साहित्य की समृद्ध परंपरा का ज्ञान प्राप्त होता है।
3. शिक्षार्थी को उत्तराखंड के कवियों का परिचय व उनके कृतित्व का ज्ञान प्राप्त होता है।
4. शिक्षार्थी को उत्तराखंड के निबंधकारो का परिचय व उनके कृतित्व का ज्ञान प्राप्त होता है।
5. शिक्षार्थी को उत्तराखंड के कहानीकारों का परिचय व उनके कृतित्व का ज्ञान प्राप्त होता है।

एम.ए.

प्रथम प्रश्नपत्र– आदिकालीन एवं निर्गुण काव्य

1. शिक्षार्थी आदिकाल के कवि अब्दुल रहमान की कृति संदेस रासक के अध्ययन से हिंदी भाषा के आदिकालीन तथा अपभ्रंश के परवर्ती रूप अवहट्ट का परिचय तथा ज्ञान प्राप्त करता है।
2. शिक्षार्थी आदिकाल के प्रसिद्ध महाकाव्य पृथ्वीराज रासों के अध्ययन से वीरकाव्य की पंरपर तथा आदिकालीन हिंदी के राजस्थानी प्रभाव वाले अवहट्ट रूप का परिचय तथा ज्ञान प्राप्त करता है।
3. संस्कृत में जयदेव की गीतकाव्य अंत्यंत महत्वपूर्ण है। हिंदी में यह महत्व विद्यापति को प्राप्त है। शिक्षार्थी विद्यापति के पदो के अध्ययन से गीतकाव्य की समृद्ध भारतीय पंरपरा तथा मैथिली भाषा का परिचय तथा ज्ञान प्राप्त करेगा।
4. शिक्षार्थी कबीर की वाणी का अध्ययन करते हुए हिंदी भक्तिकाव्य में निर्गुण के स्वरूप तथा हिंदी की संतकाव्य पंरपरा का निकट परिचय तथा सैद्धातिंक ज्ञान प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी मलिक मोहम्मद जायसी के महाकाव्य पद्मावत का अध्ययन करते हुए हिंदी भक्तिकाव्य में प्रेमाश्रयी सूफी काव्यधारा का ऐतिहासिक एवं सैद्धातिंक ज्ञान प्राप्त करता है।

द्वितीय प्रश्नपत्र– सगुण काव्य एवं रीतिकालीन काव्य

1. शिक्षार्थी मध्यकालीन सगुण भक्तिधारा व उसकी शाखाओं से रीतिकालीन काव्य तक की विभिन्न धाराओं का ऐतिहासिक परिचय और सैद्धातिक ज्ञान प्राप्त करता है।
2. शिक्षार्थी सूरदास की रचनाओं का अध्ययन कर सगुण धारा की कृष्णभक्ति शाखा का आलोचनात्मक व सैद्धातिक ज्ञान प्राप्त करता है।
3. शक्षार्थी तुलसी दास के काव्य का अध्ययन कर सगुण धारा की रामभक्ति शाखा का आलोचनात्मक व सैद्धातिक ज्ञान तथा धार्मिक–सामाजिक मान्यताओं व मतों के बीच समन्वय दृष्टि प्राप्त करता है।
4. शिक्षार्थी केशवदास के काव्य के अध्ययन से भारतीय काव्यशास्त्र का पंरपरागत ज्ञान प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी बिहारी के काव्य अध्ययन से कविता में भाषा में मितकथन व अलंकारों के सटीक प्रयोग का रचनात्मक व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।
6. शिक्षार्थी घनानदं की कविता के अध्ययन से सामाजिक रूढियों के बीच प्रेम की विलक्षण अनुभूति से परिचित होता हैं, जिससे वह तत्कालीन से लेकर समकालीन समाज तक की संबंध आधारित जटिल संरचना के ज्ञान के साथ ही विवेचन की मनोवैज्ञानिक समझ भी प्राप्त करता है।

तृतीय प्रश्नपत्र– भारतीय काव्यशास्त्र

1. शिक्षार्थी भारतीय काव्यशास्त्र की अंत्यंत समृद्ध पंरपरा का ऐतिहासिक व सैद्धातिक ज्ञान प्राप्त करता है।
2. शिक्षार्थी काव्य लक्षणों, काव्य हेतू तथा काव्य प्रयोजनों के अध्ययन से कविता के शिल्प और विषय वस्तु से लेकर उसके वृहद सामाजिक उद्देश्यों तक आलोचना का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
3. विभिन्न काव्य तत्वों के संधान के आधार पर पंरपरा में आचार्यों ने काव्य विवेचन किया, फलस्वरूप रस, अंलकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति एवं औचित्य संप्रदाय अस्तित्व में आए, जो पश्चिमी काव्य चिंतन में इस विस्तार के साथ नहीं मिलती। शिक्षार्थी इन काव्य संप्रदाओं के अध्ययन से भारतीय पंरपरा में काव्य चिंतन की विलक्षणता, गहराई और सैद्धांतिक विस्तार का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. शिक्षार्थी हिंदी आलोचना के उद्‌भव व विकास का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी हिंदी के सामान्य आलोचना सिद्धांतों का ज्ञान प्राप्त करता है।
6. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित आलोचकों के कृतित्व के अध्ययन से हिंदी आलोचना की विशिष्ट विचारधाराओं का ज्ञान प्राप्त करता है।

चतुर्थ प्रश्न–पत्रः हिंदी साहित्य का इतिहासः आदिकाल से रीतिकाल तक

1. शिक्षार्थी हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की पंरपरा, प्रविधि, काल विभाजन पद्धति, नामकरण की समस्या व औचित्य के कारणों का ऐतिहासिक व सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
2. शिक्षार्थी हिंदी साहित्य के आदिकाल की प्रमुख प्रवृतियों तथा आदिकालीन हिंदी साहित्य के अध्ययन से जैन साहित्य, बौद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, वीरकाव्य–रासो साहित्य आदि का सैद्धातिक ज्ञान और चंदबरदाई, अब्दुल रहमान, जगनिक, स्वयंभू, धनपाल, नरपति नाल्ह, विद्यापति आदि महत्वपूर्ण कवियों के कृतित्व का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करता है।
3. शिक्षार्थी हिंदी साहित्य के पूर्व मध्यकाल/भक्तिकाल के प्रमुख कवियों का ऐतिहासिक परिचय तथा प्रमुख काव्यधाराओं एवं प्रवृतियों का सैद्धातिंक ज्ञान प्राप्त करता है।
4. शिक्षार्थी हिंदी साहित्य के उत्तर मध्यकाल/रीतिकाल के प्रमुख कवियों का ऐतिहासिक परिचय तथा प्रमुख काव्यधाराओं एवं प्रवृतियों का सैद्धातिंक ज्ञान प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी रीतिकालीन कवि–आचार्यों द्वारा रचित लक्षण ग्रथों की पंरपरा का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करता है।
6. शिक्षार्थी रीतिकाल की काव्यधाराओं तथा उनके प्रतिनिधि कवियों का ऐतिहासिक परिचय एवं उनकी कविता के चमत्कारपूर्ण शिल्पगत विशिष्टता का ज्ञान प्राप्त करता है।

पंचम प्रश्नपत्र– आधुनिक हिंदी काव्यः छायावाद तक

1. शिक्षार्थी आधुनिक कविता के आरंभ का रचनात्मक परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।
2. शिक्षार्थी रत्नाकार के काव्य के अध्ययन से ब्रजभाषा के माधुर्य तथा भक्तिकालीन कृष्णभक्ति परंपरा में कवि के नवीन दृष्टिकोण का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करते है।
3. शिक्षार्थी हिंदी नवजागरण में खड़ी बोली हिंदी में काव्यरचना के सशक्त आंरभ के साक्ष्य प्राप्त करता है।
4. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कवियों जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत एवं महादेवी वर्मा और उनकी कविताओं के अध्ययन से छायावाद युग का ऐतिहासिक व सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी छायावादी कविता के अध्ययन से प्रकृति, प्रेम, सौन्दर्य, भारत की गहन भारतीय परंपरा तथा विचार की नवीन आधुनिक सरणियों/पद्धतियों का रचनात्मक एवं सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।

6

षष्ठ प्रश्नपत्र– पाश्चात्य काव्यशास्त्र

1. शिक्षार्थी साहित्यावलोकन की पश्चिमी परंपरा का विस्तृत ऐतिहासिक परिचय तथा सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
2. शिक्षार्थी प्राचीन यूनानी विचारक प्लेटो, अरस्तू तथा लोंगिनुस की काव्य मूल्यांकन संबंधी मान्यताओं और स्थापनाओं आदि का ऐतिहासिक परिचय तथा सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
3. शिक्षार्थी अंग्रेजी के महत्वपूर्ण साहित्यालोचक मैथ्यू आर्नल्ड, क्रोचे, रिचर्ड्स और इलियट के समालोचन सिद्धांतों का ऐतिहासिक परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।
4. शिक्षार्थी अंत्यंत महत्वपूर्ण अग्रेंजी कवि वर्ड्सवर्थ के काव्यभाषा सिद्धांत और कालॅरिज के कल्पना सिद्धांत के अध्ययन से पश्चिमी के प्रसिद्ध सांहित्यान्दोलन स्वच्छंदतावाद का ऐतिहासिक परिचय तथा सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी पश्चिमी साहित्य और संस्कृति की महत्वपूर्ण विचारधाराओं यथा मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, संरचनावाद और उत्तरआधुनिकतावाद का ऐतिहासिक परिचय तथा सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
6. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित विचारकों व उनके सिद्धांतों के अध्ययन से आलोचना का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है

7

सप्तम प्रश्न पत्र– हिंदी साहित्य का इतिहासः आधुनिक काल

1. शिक्षार्थी हिंदी साहित्य के आधुनिक काल का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
2. शिक्षार्थी आधुनिक काल के राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिदृश्य का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
3. शिक्षार्थी आधुनिक काल में अस्तित्व में आए साहित्यिक आदोलनों अथवा विशिष्ट धाराओं का सैद्धांतिक ज्ञान तथा नवीन रचना–दृष्टि के आलोक में उनके प्रमुख रचनाकारों का परिचय प्राप्त करता है।
4. शिक्षार्थी हिंदी में गद्य लेखन के उद्भव– विकास तथा गद्य की प्रमुख विधाओं का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी कथेतर गद्य के अंतर्गत स्मारक साहित्य और उसकी विधाओं आदि का परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।

8

अष्टम प्रश्न–पत्र– हिंदी कथा एवं नाटक साहित्य

1. शिक्षार्थी हिंदी उपन्यास, कहानी तथा नाटक के उद्भव विकास तथा महत्व का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
2. शिक्षार्थी गोदान के अध्ययन से भारतीय समाज की राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना का अंतरंग साक्षात्कार करते हुए बदल रही जीवन स्थितियों और नए संकटों समस्याओं का समझने की वैचारिक पद्धति का ज्ञान प्राप्त करता है।
3. शिक्षार्थी कगार की आग के अध्ययन से भारतीय समाज में दलित एवं शोषित वर्ग की पीड़ा का साक्षात्कार करते हुए नए सामाजिक– राजनीतिक विमर्श का परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।
4. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित कहानियों के अध्ययन से हिंदी कहानी के विकासक्रम, उनके बहुवर्णी सामाजिक कथ्य, प्रमुख कहानी आंदोलनों तथा बदलते शिल्प का परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित नाटक स्कंदगुप्त तथा लहरों के राजहंस के अध्ययन से हिंदी नाटयलेखन के विकास, भारतीय व पश्चिमी परंपरा में उसके शिल्पगत रचाव, नाटक के ऐतिहासिक–सामाजिक अभिप्रायों, प्रकारों तथा रंगमंच विधा का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
6. शिक्षार्थी कथा साहित्य तथा नाटक की समीक्षा का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

नवम प्रश्नपत्र– आधुनिक हिंदी काव्यः छायावादोत्तर

1. शिक्षार्थी छायावादोत्तर हिंदी कविता और उसकी विभिन्न काव्यधाराओं आदि का रचनात्मक परिचय व सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
2. शिक्षार्थी दिनकर के महाकाव्य उर्वशी के अध्ययन से भारतीय दर्शन की पंरपरा से परिचित होता है। तथा आधुनिक संसार में उसकी पुनर्व्याख्या का संधान करता है, उससे उसे भेदबुद्धि आदि से ऊपर उठकर संसार को समझने की चेतना, प्रेरणा व ज्ञान प्राप्त होता है।
3. शिक्षार्थी नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताओं के अध्ययन से प्रगतिशील हिंदी कविता के स्त्रोत सिद्धांतों का ज्ञान प्राप्त करता है।
4. शिक्षार्थी अज्ञेय, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, केदारनाथ सिहं, लीलाधर जगूड़ी, अशोक बाजपेयी आदि की कविताओं के अध्ययन से प्रयोगवाद, नयी कविता, साठोत्तरी कविता, समकालीन कविता आदि का रचनात्मक व सैद्धांतिक ज्ञान सोदाहरण प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी छायावादोत्तर काल की हिंदी कविता की समीक्षा का रचनात्मक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

दशम प्रश्नपत्र– भाषा विज्ञान

1. भाषा विज्ञान भाषा एवं साहित्य नहीं, अभिव्यक्तियों के संदर्भ में समाज को समझने की पद्धति के रूप में विकसित होने वाला विषय भी है। अतः इस पाठ्यक्रम से शिक्षार्थी भाषा विज्ञान के अर्थ, स्वरूप, भाषा व्यवस्था, व्यवहार और उसके महत्व का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
2. शिक्षार्थी भाषा प्रयोगशाला में उच्चस्तरीय अध्ययन व शोध हेतू आधार योग्यता व ज्ञान प्राप्त करता है।
3. शिक्षार्थी भाषा विज्ञान की प्रमुख अध्ययन–शाखाओं आदि का सैद्धांतिक व तकनीकि ज्ञान प्राप्त करता है।
4. शिक्षार्थी भाषा की सामाजिक संरचनाओं तथा भाषा के स्वरूप के आधार पर सामाजिक अभिव्यक्ति के अध्ययन का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी साहित्यिक कृतियों के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन का ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

एकादश प्रश्नपत्र– निंबंध एवं स्मारक साहित्य

1. शिक्षार्थी निबंध विधा के स्वरूप, प्रकार और महत्व का सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
2. शिक्षार्थी हिंदी में निबंध विधा के उद्भव एवं विकास का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करता है।
3. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित निबंधों के अध्ययन से हिंदी के प्रमुख निबंधकारों का परिचय, निंबंध की शैलियों और विधा का वैचारिक व रचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

4. शिक्षार्थी स्मारक साहित्य के स्वरूप, उनकी विभिन्न विधाओं तथा महत्व का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी निंबध तथा स्मारक साहित्य की समीक्षा का ज्ञान तथा प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

12

द्वादश प्रश्नपत्र– हिंदी भाषा

1. शिक्षार्थी भारत की प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक आर्यभाषाओं का ऐतिहासिक परिचय व सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
2. शिक्षार्थी हिंदी के भौगोलिक विस्तार, उपभाषाओं और बोलियों के अंत्यंत समृद्ध संसार का परिचय व ज्ञान प्राप्त करता है।
3. शिक्षार्थी हिंदी की भाषिक संरचना का विस्तृत रचनात्मक परिचय और सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
4. शिक्षार्थी हिंदी भाषा के विविध रूपों, हिंदी की संवैधानिक स्थिति एवं हिंदी के वैश्विक महत्व का परिचय एवं ज्ञान प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी नए डिजिटल संसार में कम्प्यूटर पर हिंदी के प्रयोग की प्रविधियों, तकनीक और भाषा शिक्षण का ज्ञान एवं प्रशिक्षण प्राप्त करता है।
6. शिक्षार्थी रोजगार अथवा आजीविका के क्षेत्र में हिंदी भाषा के व्यवहारा का ज्ञान एंव प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

कुमाउनी साहित्य

1. भाषा और साहित्य की नयी उत्तरसंरचनावादी पद्धति में स्थानीय भाषाओं और उनके साहित्य के अध्ययन का महत्व बढ़ा है। इस पाठ्यक्रम से शिक्षार्थी कुमाउनी साहित्य का रचनात्मक परिचय एवं सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करता है।
2. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित पछयाण तथ इजा नामक पुस्तकों के अध्ययन से कुमाउनी कविता का रचनात्मक– शिल्पगत परिचय और आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।
3. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित पुस्तक मन्याडर के अध्ययन से कुमाउनी कहानी का रचनात्मक– शिल्पगत परिचय और आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।
4. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित पुस्तक मन्खि के अध्ययन से कुमाउनी कहानी का रचनात्मक– शिल्पगत परिचय और आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित पुस्तक आपण पन्यार के अध्ययन से कुमाउनी कहानी का रचनात्मक– शिल्पगत परिचय और आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।

उत्तराखंड के हिंदी कवि

1. आधुनिक हिंदी कविता पंरपरा में उत्तराखंड राज्य के कवियों का अंत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षार्थी इस पंरपरा और उसमें उत्तराखंड के कवियों के महत्व का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करता है।
2. गुमानी ने भारतेंदु युग से पूर्व काव्य में खड़ी बोली का प्रयोग किया था। उनकी कविता तत्कालीन अंग्रेजी/कंपनी राज और सामाजिक– राजनीतिक स्थितियों के सजीव चित्र प्रस्तुत करती है। शिक्षार्थी खड़ी बोली हिंदी के प्रथम कवि गुमानी के कृतित्व का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करता है।
3. चंदकुवंर बर्त्वाल छायावाद और प्रगतिवाद के संधिकाल के प्रमुख एवं महत्वपूर्ण कवि है। शिक्षार्थी उनके कृतित्व का रचनात्मक व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।
4. शिक्षार्थी लीलाधर जगूड़ी के कृतित्व का रचनात्मक व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी वीरेन डंगवाल और मंगलेश डबराल के कृतित्व का रचनात्मक व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।
6. शिक्षार्थी हरीशंचद पांडे के कृतित्व का रचनात्मक व आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।
7. शिक्षार्थी समकालीन हिंदी कविता की समीक्षा का रचनात्मक ज्ञान व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

13(ग)

उत्तराखंड के हिंदी कथाकार

1. हिंदी के प्रेमचंदोत्तर कथा साहित्य में उत्तरांखड राज्य के कथाकारों का अंत्यंत महत्वपूर्ण योगदान व स्थान है। शिक्षार्थी इस पंरपरा और उसमें उत्तराखंड के कथाकारों के समग्र योगदान का व उनके महत्व का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त करता है।
2. शिक्षार्थी हिंदी के उपन्यास साहित्य में उत्तरांखंड के उपन्यासकारों के कृतित्व का परिचय तथा आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।
3. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित उपन्यास कसप के अध्ययन से हिंदी साहित्य में विकसित हो रहे नवीन उत्तर आधुनिक कथ्य एवं शिल्प का परिचय तथा उसका सैद्धांतिक आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।
4. शिक्षार्थी पाठ्यक्रम में सम्मिलित उपन्यास गोबर गणेश के अध्ययन से उत्तराखंड के कुमाउनी अंचल के लोक जीवन का परिचय तथा बदलते जीवनमूल्यों व सामाजिक संरचनाओं का सैद्धांतिक आलोचनात्मक ज्ञान प्राप्त करता है।
5. शिक्षार्थी कथा साहित्य की समीक्षा का ज्ञान और प्रशिक्षण प्राप्त करता है।